

International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

रचनावादी शिक्षण पद्धति का बच्चों के सर्वांगीण विकास पर प्रभाव

डॉ. अल्पना आर्य

वरिष्ठ व्याख्याता, श० उ० मा० विद्यालय खजराना। इंदौर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र रचनावादी शिक्षण पद्धति (Constructivist Teaching Approach) और बच्चों के सर्वांगीण विकास के मध्य संबंध का विश्लेषण करता है। रचनावाद एक ऐसा शैक्षिक दर्शन है जिसके अनुसार बच्चे अपने अनुभवों के आधार पर स्वयं ज्ञान का निर्माण करते हैं। यह पद्धति ज्यां पियाजे (Jean Piaget), लेव वाइगोत्स्की (Lev Vygotsky) तथा जेरोम ब्रूनर (Jerome Bruner) के सिद्धांतों पर आधारित है। इस अध्ययन में रचनावादी शिक्षण के संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक, भाषाई एवं नैतिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों की विस्तृत विवेचना की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में इस पद्धति की प्रासंगिकता का भी परीक्षण किया गया है। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि रचनावादी उपागम बच्चों के समग्र विकास में पारंपरिक शिक्षण की तुलना में अधिक प्रभावशाली है।

मुख्य शब्द (Keywords): रचनावाद, सर्वांगीण विकास, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक-भावनात्मक विकास, NEP 2020, पियाजे, वाइगोत्स्की, ब्रूनर।

1. प्रस्तावना

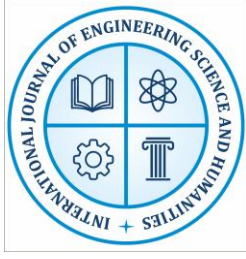
शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम पूर्ण कराना नहीं, बल्कि बच्चे का सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास करना है — जिसमें उसका बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक और नैतिक विकास सम्मिलित हो। परंपरागत शिक्षा प्रणाली में अध्यापक को ज्ञान का एकमात्र स्रोत माना जाता था और बालक को निष्क्रिय ग्राहक। यह दृष्टिकोण बालक की सृजनात्मकता और आलोचनात्मक चिंतन को बाधित करता था।

रचनावादी शिक्षण पद्धति इस पारंपरिक दृष्टिकोण से मूलभूत रूप से भिन्न है। इसके अनुसार ज्ञान किसी बाह्य स्रोत से ग्रहण नहीं किया जाता, बल्कि प्रत्येक बालक अपनी पूर्व-अनुभव संरचनाओं के आधार पर नए अनुभवों की व्याख्या करता हुआ ज्ञान का स्वयं निर्माण करता है। यह पद्धति बालक को सक्रिय, जिज्ञासु और स्वायत्त शिक्षार्थी के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी इस दर्शन को अपनाते हुए "क्षमता-आधारित शिक्षा", "अनुभव-केंद्रित अधिगम" और "आलोचनात्मक चिंतन" को शैक्षिक प्रणाली के केंद्र में रखा है। इस परिप्रेक्ष्य में रचनावादी पद्धति की बच्चों के सर्वांगीण विकास में भूमिका का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

2. साहित्य समीक्षा

रचनावादी शिक्षण पर पर्याप्त राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध उपलब्ध है जो इसकी प्रभावशीलता को प्रमाणित करता है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

2.1 पूर्ववर्ती अध्ययन

ब्रूक्स एवं ब्रूक्स (Brooks & Brooks, 1993) ने अपने शोध में पाया कि रचनावादी कक्षाओं में बच्चे गहन वैचारिक समझ विकसित करते हैं तथा तथ्यों को संदर्भ में रखकर सीखते हैं। मर्फ़ी (Murphy, 1997) ने रचनावादी शिक्षण के 16 प्रमुख लक्षणों की पहचान की जिनमें बालक-केंद्रितता, वास्तविक जीवन समस्याएँ और सामाजिक संवाद प्रमुख हैं।

भारतीय संदर्भ में NCERT (2005) के "राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा" ने स्पष्ट रूप से रचनावादी दृष्टिकोण को अपनाया। शर्मा (2018) ने मध्य प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों में किए गए अपने अध्ययन में पाया कि रचनावादी विधियों से पढ़े बच्चों की समस्या-समाधान क्षमता में 32% की वृद्धि हुई।

वर्मा एवं सिंह (2021) के शोध ने दर्शाया कि रचनावादी शिक्षण न केवल संज्ञानात्मक बल्कि सामाजिक-भावनात्मक विकास को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। NEP 2020 के पश्चात् यह विषय शैक्षिक अनुसंधान में और अधिक केंद्रीय हो गया है।

3. सैद्धांतिक आधार

रचनावादी शिक्षण तीन प्रमुख मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है:

3.1 पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत

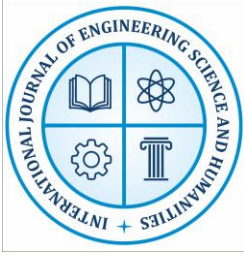
ज्यां पियाजे (1896–1980) के अनुसार बच्चे अपने आसपास के संसार को समझने के लिए मानसिक संरचनाएँ (Schemas) बनाते हैं। जब नई जानकारी इन संरचनाओं से मेल खाती है, तो आत्मसातीकरण (Assimilation) होता है; जब नहीं खाती, तो समायोजन (Accommodation) की प्रक्रिया शुरू होती है। पियाजे का मानना था कि बच्चे चार संज्ञानात्मक चरणों से गुजरते हैं: संवेदी-गतिक (0–2 वर्ष), पूर्व-संक्रियात्मक (2–7 वर्ष), ठोस संक्रियात्मक (7–11 वर्ष) तथा औपचारिक संक्रियात्मक (11+ वर्ष)। रचनावादी शिक्षण इन चरणों के अनुरूप शिक्षण-अधिगम क्रियाएँ प्रदान करता है।

3.2 वाइगोत्स्की का सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत

लेव वाइगोत्स्की (1896–1934) ने "निकटवर्ती विकास क्षेत्र" (Zone of Proximal Development – ZPD) की अवधारणा प्रस्तुत की। उनके अनुसार बच्चा अकेले जितना सीख सकता है, उससे अधिक किसी सक्षम साथी या शिक्षक की सहायता से सीख सकता है। "स्कैफोल्डिंग" (Scaffolding) की अवधारणा इसी से उपजी है। वाइगोत्स्की के सिद्धांत ने रचनावादी शिक्षण में सहयोगी अधिगम (Collaborative Learning) और सामाजिक अंतःक्रिया को केंद्रीय स्थान दिलाया।

3.3 ब्रूनर का खोज-आधारित अधिगम सिद्धांत

जेरोम ब्रूनर (1915–2016) ने "खोज-आधारित अधिगम" (Discovery Learning) और "सर्पिलाकार पाठ्यक्रम" (Spiral Curriculum) की अवधारणाएँ दीं। उनके अनुसार बच्चे तब सर्वाधिक प्रभावशाली ढंग से सीखते हैं जब वे स्वयं जानकारी खोजते हैं, परिकल्पनाएँ बनाते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं। ब्रूनर ने तीन



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

प्रकार के प्रतिनिधित्व की बात की: एनेक्टिव (क्रिया-आधारित), आइकॉनिक (चित्र-आधारित) और सांकेतिक (प्रतीक-आधारित)।

4. शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. रचनावादी शिक्षण पद्धति के मुख्य सिद्धांतों एवं विशेषताओं का विश्लेषण करना।
2. रचनावादी शिक्षण का बच्चों के संज्ञानात्मक विकास पर प्रभाव का परीक्षण करना।
3. सामाजिक-भावनात्मक एवं नैतिक विकास में रचनावादी पद्धति की भूमिका की विवेचना करना।
4. भाषाई एवं सृजनात्मक विकास पर रचनावादी उपागम का विश्लेषण करना।
5. NEP 2020 के संदर्भ में रचनावादी शिक्षण की प्रासंगिकता एवं चुनौतियों का मूल्यांकन करना।

5. शोध विधि

यह शोध पत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित विश्लेषणात्मक-वर्णनात्मक (Analytical-Descriptive) शोध है। शोध विधि के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं:

5.1 शोध स्वरूप

यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) एवं तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित है। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रों, पुस्तकों, NCERT एवं MHRD के दिशा-निर्देशों का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

5.2 सामग्री संग्रह स्रोत

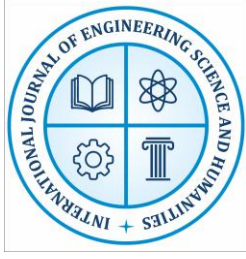
- मनोवैज्ञानिक पत्रिकाएँ एवं शैक्षिक जर्नल (ERIC, Scopus, Shodhganga)
- NCERT पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 एवं NEP 2020 दस्तावेज़
- पियाजे, वाइगोत्स्की एवं ब्रूनर के मूल ग्रंथ
- भारतीय विश्वविद्यालयों के M.Ed. एवं Ph.D. शोध प्रबंध

6. विस्तृत विश्लेषण

6.1 संज्ञानात्मक विकास पर प्रभाव

संज्ञानात्मक विकास में रचनावादी शिक्षण का योगदान सर्वाधिक सुस्पष्ट एवं शोध-प्रमाणित है। जब बालक स्वयं प्रयोग करता है, अन्वेषण करता है और समस्याओं का समाधान खोजता है, तो उसके मस्तिष्क में तंत्रिका-संरचनाएँ (Neural Pathways) अधिक दृढ़ता से निर्मित होती हैं।

रचनावादी कक्षा में बच्चे उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक कौशल जैसे विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन और सृजन (Bloom's Taxonomy के उच्चतर स्तर) का अभ्यास करते हैं। ब्लूम के वर्गीकरण के अनुसार रचनावादी शिक्षण बच्चे को "रटने" से "समझने और लागू करने" की ओर ले जाता है। अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि ऐसे बच्चे गणित, विज्ञान और भाषा में अवधारणात्मक स्पष्टता (Conceptual Clarity) अधिक विकसित करते हैं।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

6.2 सामाजिक-भावनात्मक विकास पर प्रभाव

वाइगोत्स्की के ZPD सिद्धांत पर आधारित सहयोगी अधिगम (Cooperative Learning) रचनावादी शिक्षण का एक महत्वपूर्ण अंग है। समूह परियोजनाओं, सहकर्मी शिक्षण (Peer Teaching) और चर्चा-आधारित गतिविधियों से बच्चे में निम्नलिखित सामाजिक गुण विकसित होते हैं:

- सहानुभूति (Empathy) एवं दूसरे के दृष्टिकोण को समझने की क्षमता
- संघर्ष-समाधान (Conflict Resolution) एवं वार्ता-कौशल
- नेतृत्व एवं सामूहिक जिम्मेदारी की भावना
- आत्मनिर्भरता एवं आत्म-नियमन (Self-Regulation)

भावनात्मक दृष्टि से, जब बालक को अपनी गति से सीखने की स्वतंत्रता मिलती है और उसकी जिज्ञासा का सम्मान होता है, तो उसमें आत्म-सम्मान (Self-Esteem), आंतरिक अभिप्रेरणा (Intrinsic Motivation) और अधिगम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

6.3 भाषाई एवं संचार विकास पर प्रभाव

रचनावादी कक्षाओं में बालक को अपने विचार प्रस्तुत करने, प्रश्न पूछने और वाद-विवाद में भाग लेने के पर्याप्त अवसर मिलते हैं। यह भाषाई विकास के लिए अत्यंत अनुकूल वातावरण बनाता है। वाइगोत्स्की ने स्वयं भाषा को विचार और ज्ञान-निर्माण का प्रमुख माध्यम माना। शोध दर्शाते हैं कि रचनावादी कक्षाओं के बच्चों में शब्द-भंडार, वाक्य-संरचना बोध तथा लेखन-अभिव्यक्ति में उल्लेखनीय प्रगति होती है।

6.4 नैतिक एवं मूल्य विकास पर प्रभाव

पियाजे और बाद में कोह्लबर्ग (Kohlberg) ने नैतिक विकास को संज्ञानात्मक विकास से अभिन्न रूप से जोड़ा। रचनावादी शिक्षण में बच्चे वास्तविक जीवन की नैतिक दुविधाओं (Moral Dilemmas) पर विचार-विमर्श करते हैं, जिससे उनकी नैतिक तर्कशक्ति (Moral Reasoning) परिपक्व होती है। भारतीय शैक्षिक परम्परा में यह दृष्टिकोण महात्मा गाँधी, टैगोर एवं विवेकानन्द के "शिक्षा = चरित्र-निर्माण" के दर्शन से साम्य रखता है।

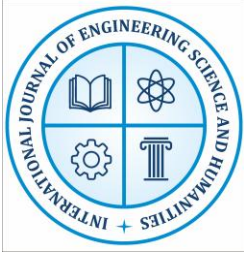
6.5 शारीरिक एवं सृजनात्मक विकास

रचनावादी शिक्षण में "क्रिया करके सीखना" (Learning by Doing) पर बल दिया जाता है। हस्त-शिल्प, प्रयोगशाला क्रियाएँ, नाटक, चित्रकारी और खेल-आधारित अधिगम बच्चे के सूक्ष्म एवं स्थूल मोटर विकास को प्रोत्साहित करते हैं। इसके अतिरिक्त, मुक्त अन्वेषण का वातावरण सृजनात्मकता (Creativity) और मौलिक सोच को बढ़ावा देता है।

7. NEP 2020 एवं रचनावादी शिक्षण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय शिक्षा में एक आमूल परिवर्तन का आह्वान किया है। इसके कई प्रावधान रचनावादी दर्शन को प्रत्यक्ष रूप से प्रतिध्वनित करते हैं:

- 5+3+3+4 पाठ्यचर्यागत संरचना — विभिन्न विकास चरणों के अनुरूप (पियाजे का प्रभाव)



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

- खेल-आधारित प्रारंभिक शिक्षा (Play-based Learning) — FLN मिशन
 - क्षमता-आधारित मूल्यांकन (Competency-Based Assessment) — रटने की संस्कृति से मुक्ति
 - बहुभाषिकता एवं स्थानीय संदर्भ — बालक के पूर्व-ज्ञान का सम्मान
 - सहयोगी एवं अनुभव-आधारित शिक्षा — ZPD एवं Scaffolding का व्यावहारिक अनुप्रयोग
- इस प्रकार NEP 2020 रचनावादी शिक्षण को भारतीय विद्यालयों में संस्थागत रूप देने का अभूतपूर्व अवसर प्रदान करती है।

8. चुनौतियाँ एवं सीमाएँ

रचनावादी शिक्षण के समक्ष भारतीय संदर्भ में कुछ व्यावहारिक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं:

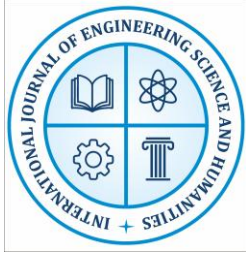
- बड़ी कक्षा-आकार (Large Class Size): 50-60 बच्चों की कक्षा में व्यक्तिगत ध्यान देना कठिन।
- परीक्षा-केंद्रित मानसिकता: परिवार और समाज अभी भी अंकों को सर्वोपरि मानते हैं।
- शिक्षक-प्रशिक्षण का अभाव: रचनावादी कक्षा-संचालन के लिए विशेष प्रशिक्षण आवश्यक है।
- संसाधनों की कमी: प्रयोगशाला, पुस्तकालय, डिजिटल उपकरणों की पर्याप्त उपलब्धता नहीं।
- पाठ्यक्रम का बोझ: विशाल पाठ्यक्रम के कारण खोज-आधारित अधिगम के लिए समय कम रहता है।

9. सुझाव एवं अनुशंसाएँ

- शिक्षक-शिक्षण संस्थाओं (B.Ed./M.Ed.) में रचनावादी शिक्षण की व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रक्रिया को अनिवार्य किया जाए।
- विद्यालयों में "Learning Corners" एवं Activity-Based Learning के लिए समर्पित समय निर्धारित हो।
- SCERT एवं NCERT स्तर पर ऐसे पाठ्य-सामग्री निर्मित की जाएँ जो रचनावादी गतिविधियों पर आधारित हों।
- मूल्यांकन प्रणाली में Portfolio Assessment, Project-Based Assessment को सम्मिलित किया जाए।
- अभिभावकों में रचनावादी शिक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए कार्यशालाएँ आयोजित हों।
- ग्रामीण विद्यालयों में कम-लागत की रचनावादी गतिविधियाँ विकसित की जाएँ जो स्थानीय संदर्भ से जुड़ी हों।

10. निष्कर्ष

रचनावादी शिक्षण पद्धति केवल एक शैक्षिक तकनीक नहीं, बल्कि बालक को केंद्र में रखने वाला एक समग्र दर्शन है। पियाजे, वाइगोत्स्की और ब्रूनर के सैद्धांतिक आधारों पर टिकी यह पद्धति बच्चे के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक, भाषाई, नैतिक और सृजनात्मक विकास को एकसाथ पोषित करती है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

शोध-साक्ष्य और अनुभव दोनों इस बात की पुष्टि करते हैं कि रचनावादी कक्षाओं के बच्चे न केवल बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन करते हैं, बल्कि अधिक आत्मविश्वासी, सहयोगी और जिम्मेदार नागरिक बनते हैं। NEP 2020 के क्रियान्वयन के इस महत्वपूर्ण दौर में रचनावादी शिक्षण को भारतीय विद्यालयों में व्यापक रूप से अपनाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

अंततः, सर्वांगीण विकास की यात्रा तभी सफल होगी जब बच्चे को "रिक्त पात्र" न मानकर एक "सक्रिय ज्ञान-निर्माता" के रूप में स्वीकार किया जाए — और यही रचनावाद का मर्म है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. Brooks, J. G., & Brooks, M. G. (1993). In search of understanding: The case for constructivist classrooms. ASCD.
2. Bruner, J. S. (1960). The Process of Education. Harvard University Press.
3. Kohlberg, L. (1984). The Psychology of Moral Development. Harper & Row.
4. Murphy, E. (1997). Characteristics of constructivist learning and teaching. Université du Québec.
5. NCERT (2005). National Curriculum Framework 2005. New Delhi: NCERT.
6. Piaget, J. (1952). The origins of intelligence in children. Norton.
7. शर्मा, आर. (2018). माध्यमिक स्तर पर रचनावादी शिक्षण का विज्ञान उपलब्धि पर प्रभाव। शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर।
8. Vygotsky, L. S. (1978). Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes. Harvard University Press.
9. वर्मा, ए. एवं सिंह, पी. (2021). रचनावादी शिक्षण और सामाजिक-भावनात्मक विकास: एक समीक्षात्मक अध्ययन। भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 14(2), 45–62।
10. Ministry of Education, GoI (2020). National Education Policy 2020. New Delhi: MoE.